ॐ

ऋग्वेद १.३५.६

ब्रह्माण्ड, सूर्य और ऊर्जा का वैदिक विज्ञान

प्रस्तुति: आचार्य कपिल

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

सम्पर्क: ८७५६३९०७६७

यह मन्त्र ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, ३५वें सूक्त का छठा मन्त्र है। इसके देवता सविता (सूर्य) हैं। यह मन्त्र सौरमण्डल की संरचना, ग्रहों की गति, गुरुत्वाकर्षण और ब्रह्माण्ड में ऊर्जा के वितरण का और यमलोक के स्थान का अत्यंत गूढ़ वर्णन करता है।

मूल मन्त्र

> **तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ एकां यमस्य भुवने विराषाट् ।**
> **आणिं न रथ्यंमृताधिं तस्थुरिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत् ॥६**

शब्दार्थ (Word-by-Word Meaning)

तिस्रः: तीन।

द्यावः: प्रकाशमान लोक (सायण) / सूर्य, अग्नि और विद्युत् रूपी प्रकाशमान पदार्थ (दयानन्द)।

सवितुः: सविता देव अर्थात् सूर्य के।

द्वौ: दो लोक (स्वर्ग और पृथ्वी) / दो स्वप्रकाशित भूगोल।

उपस्था: समीप स्थित हैं / आकर्षण में स्थित हैं।

एका: एक तीसरा लोक (अन्तरिक्ष) / विद्युत् (बिजली) का प्रकाश।

यमस्य: यमराज के / यम अर्थात् वायु के।

भुवने: लोक में / अन्तरिक्ष स्थान में।

विराषाट्: गमन करने वाले प्रेतों को सहने वाला (सायण) / वीरों और ज्ञानियों को धारण करने वाला (दयानन्द)।

आणिम्: रथ की धुरी या कील (सायण) / संग्राम या संघर्ष (दयानन्द - निघण्टु के आधार पर)।

न: के समान (Like)।

रथ्यम्: रथ के / रथ को वहन करने वाले।

अमृता: अमरणशील पदार्थ, जल, ग्रह-नक्षत्र।

अधि तस्थुः: आश्रित होकर स्थित हैं।

इह: यहाँ (इस संसार या विषय में)।

ब्रवीतु: कहे, उपदेश करे।

यः: जो मनुष्य।

ऊँ: निश्चय ही / विचारपूर्वक।

तत्: उस रहस्य या ज्ञान को।

चिकेतत्: जानता है।

तुलनात्मक अनुवाद (Comparative Translation)

१. आचार्य सायण का भाष्य (पौराणिक एवं ब्रह्माण्डीय अर्थ)

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कुल तीन प्रकाशमान लोक हैं। इनमें से दो लोक (स्वर्ग और पृथ्वी) सूर्य (सविता) के अधीन हैं और उसी से प्रकाशित होते हैं। तीसरा अन्तरिक्ष लोक यमराज का मार्ग है, जो परलोक जाने वाले जीवों को धारण करता है। जिस प्रकार एक तेज चलते हुए रथ का पहिया अपनी धुरी (कील/Axle) पर सुरक्षित टिका रहता है, ठीक उसी प्रकार अन्तरिक्ष के सभी अमरणशील पदार्थ (चन्द्रमा, ग्रह, तारे, जल) सूर्य के ही आश्रित होकर टिके हुए हैं। जो मनुष्य सूर्य की इस महिमा को पूर्णतः जानता है, वह यहाँ इसके बारे में बताए। (अर्थात् यह रहस्य अनंत है)।

२. महर्षि दयानन्द का भाष्य (भौतिक विज्ञान एवं यौगिक अर्थ)

प्रकृति में तीन मुख्य प्रकाशमान तत्त्व हैं - सूर्य, अग्नि और विद्युत् (बिजली)। इनमें से सूर्य और पृथ्वी आदि भूगोल एक-दूसरे के समीप आकर्षण में स्थित हैं। तीसरी विद्युत् ऊर्जा वायु के स्थान (अन्तरिक्ष) में व्याप्त है, जो ज्ञानियों और पुरुषार्थी जीवों को धारण करती है। जैसे रथ को खींचने वाले घोड़े संग्राम में रथ के अनुकूल स्थिर रहते हैं, वैसे ही अविनाशी कारण-पदार्थ (जल, सूक्ष्म तत्त्व) सूर्य और वायु के आश्रय से अन्तरिक्ष में स्थित हैं। जो विज्ञानी मनुष्य सृष्टि के इस रहस्य को जान ले, वह संसार को इसका उपदेश करे।

व्याकरणिक विवेचन (Grammatical Generation of Meaning)

वैदिक संस्कृत के व्याकरण (पाणिनि अष्टाध्यायी) के अनुसार इस मन्त्र के कुछ विशिष्ट पदों की सिद्धि इस प्रकार है:

- **विराषाट्:** यह 'विरा' (वीर/गमनशील) और 'षाट्' (सहने वाला) से बना है। यहाँ 'वृञ् वरणे' धातु से कर्म में 'क' प्रत्यय और छान्दस प्रयोग से 'इत्व' (विरा) हुआ है। 'छन्दसि सहः' (३.२.६३) से 'सह' धातु को 'ण्वि' प्रत्यय हुआ है। 'सहेः साढः सः' (८.३.५६) सूत्र से 'स' को 'ष' (षत्व) आदेश हुआ है।
- **उपस्था:** यहाँ 'आङ्याजयारां चोपसंख्यानम्' वार्तिक से सप्तमी विभक्ति के स्थान पर 'आङ्' (आ) आदेश हुआ है। 'आङोऽनुनासिकश्छन्दसि' (६.१.१२६) से प्रकृतिभाव होकर सन्धि नहीं हुई है।

- **चिकेतत्:** यह 'कित ज्ञाने' धातु का रूप है। यह वैदिक 'लेट्' लकार (जो लौकिक संस्कृत में नहीं होता), प्रथम पुरुष, एकवचन का प्रयोग है। 'बहुलं छन्दसि' से शप् के स्थान पर 'श्लु' और द्वित्व होकर 'चिकेतत्' बनता है।
- **आणिम्:** सायण इसे रथ की धुरी (कील) मानते हैं, जबकि दयानन्द निघण्टु (२.१७) का प्रमाण देते हैं जहाँ 'आणि' शब्द संग्राम (युद्ध) के नामों में पठित है।

मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

यह मन्त्र आधुनिक खगोल विज्ञान (Astrophysics) और भौतिकी (Physics) के कई सिद्धान्तों को रूपकात्मक भाषा में प्रस्तुत करता है:

१. गुरुत्वाकर्षण और सौरमण्डल (Gravitation & Heliocentrism)

"आणिं न रथ्यम् अमृताधि तस्थुः" - यह पंक्ति गुरुत्वाकर्षण का अत्यंत सटीक वर्णन है। जिस प्रकार पहिया अपनी धुरी (Axle) से बंधा रहता है और तीव्र गति से घूमने पर भी बाहर नहीं छिटकता (Centripetal Force), उसी प्रकार अंतरिक्ष के सभी ग्रह-नक्षत्र और जल (Amrita) सूर्य (सविता) के गुरुत्वाकर्षण बल की धुरी से बंधे हुए अपनी कक्षाओं में परिक्रमा कर रहे हैं।

२. ऊर्जा के तीन रूप (Forms of Energy)

महर्षि दयानन्द के अनुसार 'तिस्रो द्यावः' का अर्थ ब्रह्मांड की तीन मुख्य ऊर्जाएं हैं:

- **सूर्य (Solar Energy):** जो सौरमण्डल का केंद्र है।
- **अग्नि (Thermal/Geothermal Energy):** जो पृथ्वी (भौतिक जगत) को चलाती है।
- **विद्युत् (Electromagnetic Energy):** जो 'यमस्य भुवने' अर्थात् वायुमण्डल/अन्तरिक्ष में व्याप्त है (Ionosphere/Lightning)।

३. जल चक्र और वायुमण्डल (Water Cycle)

मन्त्र कहता है कि 'अमृता' (जल) अंतरिक्ष में सूर्य और वायु के अधीन टिका है। विज्ञान भी मानता है कि पृथ्वी का जल वाष्पीकृत होकर वायुमण्डल (अन्तरिक्ष) में मेघों के रूप में सूर्य की ऊष्मा और वायु के दबाव के कारण ही टिका रहता है (यमस्य भुवने)।

४. वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रेरणा

मन्त्र का अंतिम भाग "इह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्" (जो इसे जाने, वह बताए) एक वैज्ञानिक चुनौती है। यह अंधविश्वास के बजाय ब्रह्मांड के रहस्यों की खोज करने और उस ज्ञान (Science/Vidya) को समाज में साझा करने का आह्वान करता है।

आचार्य कपिल- यमलोक का रहस्य और उसका स्थान

मन्त्र में ग्रहों को रथ के समान एक कील पर टिके होने को बताया है और सूर्य के प्रभाव से दूर एक क्षेत्र का वर्णन है इससे यमलोक का रहस्य खुल जाता है-

१. रथ की धुरी और पृथ्वी की कील (Earth's Axis of Rotation)

मन्त्र में 'आणिम्' (धुरी या कील) का वर्णन है, जिस पर ग्रह टिके हैं।

वैज्ञानिक प्रमाण (Scientific Proof): विज्ञान प्रमाणित करता है कि पृथ्वी अंतरिक्ष में अपनी एक काल्पनिक कील या धुरी (Axis of Rotation) पर 23.5 डिग्री (23.5°) झुकी हुई है। जिस प्रकार रथ के पहिये के बीच की कील (Axle) पहिये को बिखरने नहीं देती, उसी प्रकार पृथ्वी का अपना गुरुत्व-केंद्र और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण (Gravitational Pull) एक 'अदृश्य कील' की तरह काम करते हैं। इसी धुरी पर पृथ्वी लगभग 1670 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से घूमती (Spin) है, जिससे दिन और रात होते हैं। मन्त्र का 'आणिं न रथ्यम्' आधुनिक भौतिकी (Physics) के 'Axis of Rotation' का सटीक वर्णन है।

२. यमलोक, वायु की गति और दक्षिणी ध्रुव (South Pole & High Winds)

वैदिक और पौराणिक ग्रंथों में 'दक्षिण दिशा' का स्वामी यम को माना गया है। महर्षि दयानन्द ने मन्त्र में 'यम' का अर्थ 'वायु' किया है। यदि हम दक्षिण दिशा (दक्षिणी ध्रुव/Antarctica) और वायु की गति का वैज्ञानिक विश्लेषण करें, तो आश्चर्यजनक समानताएं मिलती हैं:

वैज्ञानिक प्रमाण (Scientific Proofs):

- **A. गरजता चालीसा और भयंकर पचासा (Roaring Forties & Furious Fifties):** उत्तरी गोलार्ध (Northern Hemisphere) की तुलना में दक्षिणी गोलार्ध (Southern Hemisphere) में जमीन बहुत कम और समुद्र बहुत अधिक है। भूगोल और मौसम विज्ञान (Meteorology) के अनुसार, दक्षिणी अक्षांश (Latitudes) 40° से 60° के बीच हवा के रास्ते में रुकावट पैदा करने वाले पहाड़ या भूखंड नहीं होते। इस कारण यहाँ पृथ्वी की सबसे तेज़ हवाएं चलती हैं। विज्ञान में इन्हें नाविकों द्वारा दिए गए नाम Roaring Forties (गरजता चालीसा), Furious Fifties (भयंकर पचासा) और Screaming Sixties (चीखता साठा) के नाम से जाना जाता है। यह "वायु के भयंकर रूप" (यम) का सीधा प्रमाण है।

- **B. अंटार्कटिका की कैटाबैटिक पवनें (Katabatic Winds of Antarctica):** पृथ्वी का सबसे दक्षिणी छोर यानी दक्षिणी ध्रुव (South Pole/Antarctica) विज्ञान के अनुसार पृथ्वी का सबसे हवादार महाद्वीप (Windiest Continent) है। यहाँ गुरुत्वाकर्षण के कारण ठंडी और भारी हवाएं बर्फ के पहाड़ों से नीचे तटों की ओर भयानक गति से दौड़ती हैं, जिन्हें 'कैटाबैटिक पवनें' (Katabatic Winds) कहते हैं। इनकी गति 300 किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक हो सकती है (जो सबसे भयंकर तूफानों से भी तेज़ है)।
- **C. अंटार्कटिक ध्रुवीय भंवर (Antarctic Polar Vortex):** दक्षिणी ध्रुव के ठीक ऊपर समताप मंडल (Stratosphere) में हवा का एक विशाल चक्रवात हमेशा घूमता रहता है, जिसे ध्रुवीय भंवर (Polar Vortex) कहते हैं। यह वायु का एक अभेद्य दुर्ग है।
- **D. जीवन का अभाव (The Realm of Yama - Death):** अंटार्कटिका (दक्षिणी ध्रुव) पृथ्वी का सबसे ठंडा (-89°C तक), सूखा और बर्फीला मरुस्थल है। यहाँ का वातावरण इतना कठोर है कि यहाँ सामान्य जीवन (पेड़-पौधे, जानवर, मनुष्य) का पनपना असंभव है। मृत्यु के देवता (यम) के लोक में जीवन का न होना, इस भौगोलिक सत्य से पूरी तरह मेल खाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

वैदिक ऋषियों ने जब "यमस्य भुवने" कहा और यम को दक्षिण का स्वामी बताया, तो वे संभवतः पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुव (South Pole) की उस भयंकर भौगोलिक और वायुमंडलीय स्थिति का ही वर्णन कर रहे थे, जहाँ:

- वायु (यम) अपनी सबसे विनाशकारी और प्रचंड गति (300+ km/h) में बहती है।
- यह क्षेत्र इतना दुर्गम है कि यह वस्तुतः मृत्यु का लोक (यमलोक) प्रतीत होता है।
- और यह सब उसी पृथ्वी पर हो रहा है, जो अपनी काल्पनिक धुरी (आणिम्) पर ब्रह्मांड में घूम रही है।

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउन्डेशन

प्रस्तुति: आचार्य कपिल

संस्था मे सदस्यता के लिए सम्पर्क करें: ८७५६३९०७६७